# **Full Cost pricing**


*Pranav Shekhar*

*Assistant Professor*

*Department of Economics*


*Notes for PG second semester*

Full cost Pricing :— 1939 में Hall और Hitch ने परंपरागत अर्थशास्त्र के सिद्धांत MC = MR की आलोचना करते हुए यह विचार दिया कि वर्तमान स्थिति में modern firms केवल का सर्वोत्तम लाभ या ऐसी स्थिति की अपेक्षा नहीं करते जहाँ सिमांत आगम (MR) और सिमांत लागत (MC) की बराबरी इत्यादि संभव है। Hall और Hitch के अनुसार वर्तमान firm full cost Pricing या Average cost Pricing पर अपना ध्यान केन्द्रित करते है। इसलिए इस सिद्धांत को Average cost Pricing सिद्धांत भी कहा जाता है।

Hall और Hitch ने 38 उद्यमियों के साक्षात्कार के आधार पर कुछ व्यवहारिक नतीजे प्राप्त किए। 38 उद्यमियों में 33 उत्पादक, 3 खुदरा विक्रेता एवं 2 Builder. का साक्षात्कार लिया। इस साक्षात्कार में उन्होंने निम्न बिन्दुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया, जैसे → i) वस्तुओं के माँग वक्र की स्थिति ii) माँग वक्र की लोच एवं iii) बाजार में उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं पर बल इत्यादि।

व्यवहारिक अध्ययन के आधार पर Hall और Hitch ने यह परिणाम प्राप्त किया कि modern firms जो कि अल्पाधिकार बाजार के अंतर्गत

काम कर रहे है वह सिमांत लागत या सिमांत आगम की बराबरी पर अपना ध्यान केंद्रित न करके full cost pricing या Average cost pricing पर अपना ध्यान केन्द्रित करते है।

→ कुल लागत क्या है ?

Hall और Hitch के अनुसार कुल लागत Average variable cost + Average fixed cost + Profit margin अर्थात,

FC = AVC + AFC + P

जहाँ, FC = full cost (कुल लागत)

AVC = Average variable cost

AFC = Average fixed cost

P = Profit margin

Hall और Hitch के अनुसार नवीन firm वर्तमान बाजार स्थिति में इसी आधार पर अपने वस्तुओं की कीमत का निर्धारण करते है ना कि MR और MC के आधार पर।

full cost या Average cost pricing की नीति अपनाने के पीछे firm के निम्न उद्देश्य होते हैं :-

i) फर्मों के बीच कपटपूर्ण या खुली संधि

ii) उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं की सही पूर्वानुमान की समस्या

iii) बाजार में व्याप्त अनिश्चितताएँ

5) फर्म के कीमत बदलने पर प्रतिस्पर्धी फर्मों की प्रतिक्रिया का ज्ञान

6) व्यवसाय की नैतिक जिम्मेदारियाँ

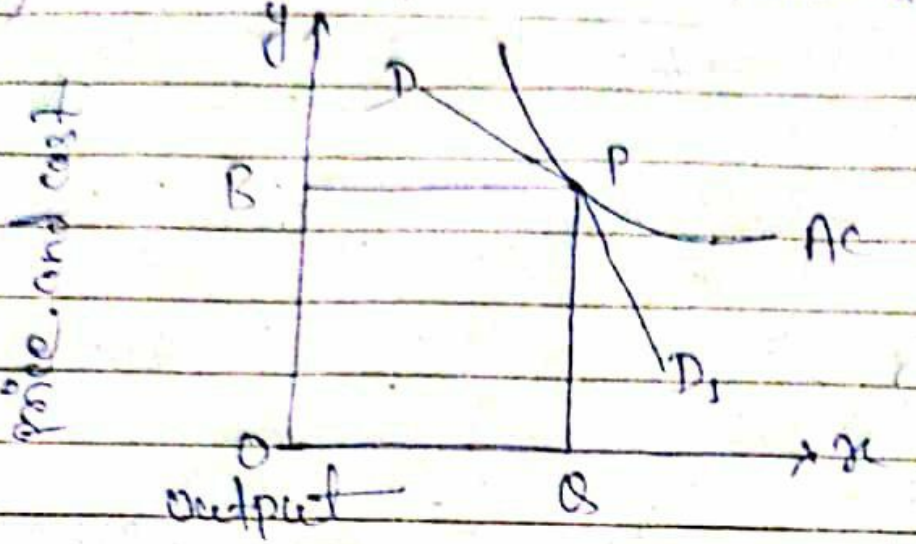




दिए गए चित्र में full cost pricing सिद्धांत में अल्पाधिकार बाजार की स्थिति को दर्शाया गया है जो कि मूल्य की स्थिरता एवं कठोरता पर आधारित है। दिए गए चित्र में x-axis पर output एवं y-axis पर मूल्य एवं लागत को दर्शाया गया है। यहाँ P बिन्दु पर एक kink है जो कीमत की स्थिरता को दर्शाता है। इस चित्र को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। माँग वक्र का ऊपर वाला हिस्सा DP जो अधिक लोचदार है एवं माँग वक्र का नीचे वाला हिस्सा $DP_1$ अर्थात जो अपेक्षाकृत कम लोचदार है। अब यदि एक अल्पाधिकारी फर्म अपने वस्तु की

कीमत को बढ़ाएगा तो अन्य विक्रेता उनकी कीमत के अनुरूप अपने वस्तु की कीमत नहीं बढ़ायेंगे एवं उसे नुकसान उठाना पड़ेगा। यही कारण और यदि वह विक्रेता अपनी वस्तु की कीमत कम करता है तो अन्य फर्म भी उसका अनुसरण करते हुए अपनी वस्तु की कीमत घटा देंगे। इससे वस्तु की बिक्री तो बढ़ जाएगी मगर आय घट जाएगी। इसलिए अल्पाधिकार में Hall और Hitch ने कीमत स्थायित्व एवं Price Rigidity पर बल दिया है। वस्तु की कीमत OB पर स्थिर रहेगी एवं वस्तु की मात्रा OB रहेगी। P बिन्दु पर अल्पाधिकारी बाजार में संतुलन स्थापित होगा जहाँ AC उदासीनता वक्र P बिन्दु पर tangent होगा से उपभोक्ता संतुलन भी होगा।

निष्कर्ष :—

Hall और Hitch के अनुसार कीमत कठोरता निम्न दो कारणों से बाधित हो सकती है:—

1) अगर किसी वस्तु की माँग में आश्चर्य जनक रूप से वृद्धि या कमी हो जाए।

2) अगर वस्तु के उत्पादन के तकनीक में कोई विकास हो जाए।